अजित फाउण्डेशन द्वारा प्रकाशित बाल पत्रिका माह अगस्त 2025 वर्ष 5 अंक 12

चहलपहल

अनुक्रमणिका

संपादकीय	3

कहानियां

कछुआ और शेर	बद्री प्रसाद वर्मा	4
हंसी की कीमत	विकास विश्नोई	5
चिड़ियां का चश्मा	नरेश मेनन	11
ताकत	पूनम पांडे	14
एकता में बल	डॉ. रंजना	22

कविताएं

आजादी का गान	सुरेश चन्द्र	07
आया बादल	टिकेश्वर सिन्हा	07
कागज की नांव	डॉ. सत्यवान	08
पौधे लगाए	गौरीशंकर वैश्य	08
किताबों में चिड़िया	डॉ. राकेश चक्र	09
ओले पड़ने की...	रोचिका अरूण शर्मा	09
उड़ाए हाथी ने....	डॉ. प्रदीप कुमार	10
खेलों की महत्ता	अशोक आनन	10
पन्द्रह अगस्त...	आयुष्मान वर्मा	13
प्रकृति की पुकार	वरूण देव	13

विविध

बच्चों का कोना	15 से 17	
भूल–भूलैया	चांद मोहम्मद घोसी	18
दुनियां के देश	संजय पुरोहित	19
जाने आकाश के.....	संजय श्रीमाली	25

अजित फाउण्डेशन द्वारा प्रकाशित
संपादक - संजय श्रीमाली
अगस्त 2025

आप अपनी रचनाएं इस ईमेल पते पर भेजे
chahalpahalnew@gmail.com

मुख्य आवरण पृष्ठ अंकित चित्र अनुष्का द्वारा बनाया गया है।

संपादकीय

हमारे छोटे-छोटे प्रयास देश को मजबूत बनाते है

प्यारे बच्चों

इस माह हम सभी देश की आजादी का पर्व मनाएंगें। जी हां 15 अगस्त। सन् 1947 में 15 अगस्त के ही दिन हमारे देश को आजादी मिली। आज 78 वर्ष हो गए। हम भारत देश के नए संविधान, नियम, कानूनों के तहत हमारा जीवन व्यत्ति कर रहे है। बच्चों आज हम खुल कर बात कर सकते है या फिर अपने अधिकारों के बारे में अपनी आवाज उठा सकते है यह आजादी के बाद ही संभव हो सका है। हमारे स्वतंत्रता सेनानियों एवं देशभक्तों ने अपने जीवन की आहूति देकर हमें आजादी दिलवाई है। इसका हमें सदा स्मरण रहना चाहिए। हमारा हर कदम देशहित को ध्यान में रखते हुए होना चाहिए।

बच्चों आजादी की लड़ाई में सभी वर्ग एवं धर्म के लोगों ने अपनी ओर से योगदान दिया। सभी ने समभाव से देश निर्माण में सहयोग किया। निस्वार्थ भाव से एक-दूसरे की मदद करके स्वतंत्रता को अपना लक्ष्य बनाया, तभी हम स्वतंत्र हुए।

मैं आपको इसलिए यह सभी बातें बता रहा हूं कि हमें देश की अखण्डता एवं समभाव बनाएं रखने के लिए अपनी ओर से भी मदद करनी चाहिए। और आप यह मदद हम अपने अच्छे विचारों के द्वारा कर सकते हैं। आप अपने विचारों को सुदृढ़ करें, अपनी सोच को विकसित करें।

हमारा देश आज हर क्षेत्र में नवीन आयाम हासिल कर रहा है चाहें वह अंतरिक्ष हो या फिर तकनीकि ज्ञान। हम पढ़ लिखकर देश की सेवा कर सकते है। हम अच्छे नागरिक बनकर सुदृढ समाज की परिकल्पना कर सकते है। हमारे छोटे-छोटे प्रयास हमारे आस-पास के माहौल को अच्छा बनाते है तथा आपसी सामंजस्य कायम रखने में बहुत सहयोगी साबित होते है।

जय हिन्द....

संजय श्रीमाली

कछुआ और शेर

बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

एक जंगल में एक शेर रहता था। वह बहुत अत्याचारी था। वह आए दिन निर्दोष जानवरों को मारकर खा जाता था। शेर के अत्याचार से सारे जंगल वासी बहुत दुखी रहते थे। जंगल से हो कर एक नदी बहती थी। शेर रोज नदी तट पर पानी पीने आता था। नदी में एक विशाल कछुआ रहता था। कछुआ और शेर में गहरी दोस्ती थी।

चित्र : स्तुति बिस्सा

एक रोज एक हिरन नदी तट पर पानी पीने आया तो कछुआ हिरन से पूछ पड़ा तुम जंगल के राजा शेर को जानते हो ? हां अच्छी तरह जानता हूं। मगर शेर बहुत अत्याचारी है वह आए दिन किसी न किसी जानवर को मार कर खा जाता है इसलिए। क्या तुम हम सबको उस से बचा सकते हो ? हां क्यों नहीं ! मैं शेर से सबको बचा सकता हूं। ताकी तुम सब सुख की जिन्दगी जी सको। कछुआ की बात सुनकर हिरन बहुत खुश और बोला तुम किसी तरह से शेर को हमारे रास्ते से हटा दो तो तेरा एहसान हम जीवन भर नहीं भूला सकते हैं।

अगले दिन शेर जैसे नदी तट पर पानी पीने पहुंचा वैसे ही कछुआ शेर से बोला शेर राज नदी उस पार एक हरा भरा जंगल है जंगल में बहुत सारे जानवर रहते हैं। अगर तुम कहो तो तुमको नदी उस पार छोड़ सकता हूं। कछुआ की बात सुनकर शेर बहुत खुश हुआ और उस पार जाने को तैयार हो गया।

शेर को कछुआ ने अपने पीठ पर बैठा लिया और नदी उस पार जाने लगा। बीच नदी में पहुंचकर कछुआ बोला शेर भाई मुझे जोर की भूख लगी है। तुम यहीं ठहरो में अभी अपने घर जाकर खाना खाकर आता हूं। इतना कहकर कछुआ पानी में शेर की पैर पकड़कर अंदर जाने लगा। कुछ ही देर में शेर पानी में डूबकर मर गया। अगले दिन सुबह कछुआ ने जब शेर के मरने की सूचना जंगल वासियों को दी तो सभी जानवर बहुत खुश हुए और कछुआ को बधाई देने लगे।

पता – गोलाबाजार, गोरखपुर उ. प्र.

हँसी की कीमत

विकास बिश्नोई

राजू एक निजी कंपनी में चपरासी था। काम छोटा था, पर मन में बड़ा आदरभाव लिए चलता। एक तरह से वह पूरे दफ्तर की धुरी था। सबसे पहले पहुँचता, चाय बनाता, फाइलें पहुँचाता, और बॉस की डाँट भी चुपचाप पी जाता। उसकी साइकिल की टोकरी में सब्जियों से ज्यादा उसकी आशाएँ लटकती थी। बच्चों की फीस, पत्नी की दवाई, और कभी–कभार एक मिठाई की पुड़िया। जीवन सरल था, पर सधा हुआ था। जैसे पुराने समय की दोपहरी, जिसमें धूप तो होती है, पर झुलसती नहीं। एक दिन, कंपनी से एक पत्र आया। सादी भाषा में एक भयानक निर्णय लिखा था। "हमें खेद है..." और बस। दफ्तर बंद हो गया था। ज़िंदगी की गाड़ी, जो अब तक कच्ची सड़कों से चलती हुई आ रही थी, एक गड्ढे में गिर पड़ी। राजू कई दिनों तक अवाक रहा। नौकरी ढूँढने निकला, पर कहीं से जवाब न मिला। कहीं कहा गया। 'काम नहीं है', कहीं, आपकी उम्र अब ऐसी नहीं रही, और कहीं तो यह भी, अब तुम्हारे जैसे लोगों की ज़रूरत नहीं। छह महीने बीत गए। बच्चों की हँसी कम होने लगी, और घर में चुप्पियाँ बढ़ गईं। राशन के डिब्बे खाली होते गए, और दिल में चिंता भरने लगी। मकान मालिक ने एक रात दरवाज़े पर दस्तक दी। वही दस्तक जो सिर्फ़ दरवाज़े पर नहीं, आत्मा पर होती है। कल तक किराया नहीं दिया तो घर खाली कर दो।

उस रात सीमा ने रोटी परोसी और एक सवाल भी। "हम बच्चों को क्या जवाब देंगे, उन्हें कल कहाँ लेकर जाएंगे ? राजू ने जवाब नहीं दिया। उसने रोटी का एक टुकड़ा पानी में डुबोकर निगला। जैसे अपनी आत्मा को निगल रहा हो। सुबह होते–होते, वह कुछ और हो गया था। न चेहरा बदला था, न शरीर, पर आँखों में अब एक औरत की तरह लाचारी थी। वह लाचारी, जो आँसू नहीं

बहाती, पर दिल में समंदर रखती है। उसने बाज़ार से एक जोकर की नकली नाक, सस्ता विग, और कुछ रंग खरीदे। पुराने कपड़ों को काट–पीटकर एक भड़कीला पहनावा बनाया। आईने में खुद को देखा, तो खुद पर हँस पड़ा। पर यह हँसी बाहर की थी, भीतर तो वह रो पड़ा।

अब वह पुरानी दिल्ली की गलियों में जोकर बनकर घूमता था। हाथ में तख्ती "जोकर के साथ सेल्फी। सिर्फ 10 रुपये। हँसी अब उसकी रोज़ी थी। हर मुस्कान के पीछे आँसुओं का समंदर छुपा था। लोग उसकी ओर देखकर हँसते, बच्चे ताली बजाते, कोई वीडियो बनाता। एक बच्चा बोला, "माँ! जोकर रो क्यों रहा है?

माँ ने कहा, "बेटा, ये बस एक्टिंग कर रहा है।" कौन समझे कि यह अभिनय नहीं था, यह एक पिता का आत्मबलिदान था। राजू घर आने से पहले अपना रंग मिटा देता। बच्चे पूछते, "पापा, आज भी मीटिंग थी क्या ?"

वह मुस्कुरा देता। सीमा कुछ नहीं कहती, पर उसकी आँखें बहुत कुछ पूछती। एक दिन गुड़िया ने अपनी नोटबुक में जोकर की तस्वीर बनाई थी। हाथ में दिल था और नीचे लिखा था।"मेरा हीरो"।

राजू ने वह पन्ना देखा और फूट–फूटकर रो पड़ा। एक दिन उसका बेटा आरव बोला, "पापा, टीचर ने कहा कि जो सबसे ज्यादा मुस्कुराता है, वो सबसे बहादुर होता है। मैं भी आपकी तरह बनना चाहता हूँ।" राजू ने कहा, "बनेगा बेटा, मुझसे बड़ा।" आरव ने धीरे से कहा, "पापा, कल मैंने आपको देखा था। आप जोकर थे। लेकिन मेरे लिए, आप सबसे महान इंसान हो। आपने अपनी इज़्ज़त, अपनी खुशी, अपना स्वाभिमान सब कुछ हमारे लिए छोड़ दिया। लोग आपको 10 रुपये का जोकर समझते हैं, पर मेरे लिए आप सबसे कीमती इंसान हो।"

उस दिन राजू पहली बार रंगों के बिना मुस्कुराया। एक सच्ची, आत्मा से निकली मुस्कान। उसने बेटे को गले से लगाया और कहा, "तेरा पिता जोकर नहीं, एक योद्धा है। जो बच्चों के भविष्य की लड़ाई मैदान में उतरकर लड़ता है।"

पता– 313, सेक्टर 14, हिसार

आजादी का गान

सुरेश चन्द्र 'सर्वहारा'

चित्र : गणेश साद

तोड़ गुलामी की जंजीरें
देश हुआ आजाद,
आपस में अब प्रेम–भाव से
रहें सभी आबाद।
अमर शहीदों के सपनों को
करना मिल साकार,
न्याय सुलभ हो सभी जनों को
रहे न अत्याचार।
अपना–अपना काम करें हम
इसको पूजा मान,
नव विकास में आज लगा दें
अपनी पूरी जान।
भेदभाव और ऊँच–नीच की
बातें सब बेकार,
गौरवमय जीवन जीने का
है सबको अधिकार।
देश–प्रेम के भरे हुए हों
सबके मन में भाव,
मिले विभाजन के जो हमको
भर जाएँ सब घाव।
भारत देश चमन है अपना
हम सब इसके फूल,
खिलें सभी के मन खुशियों से
बीती बातें भूल।
रहे तिरंगे की दुनिया में
बनी निराली शान,
आओ मिलकर हम सब गाएँ
आजादी का गान।

पता –3 फ 22 विज्ञाननगर, कोटा

आया बादल

टीकेश्वर सिन्हा 'गब्दीवाला'

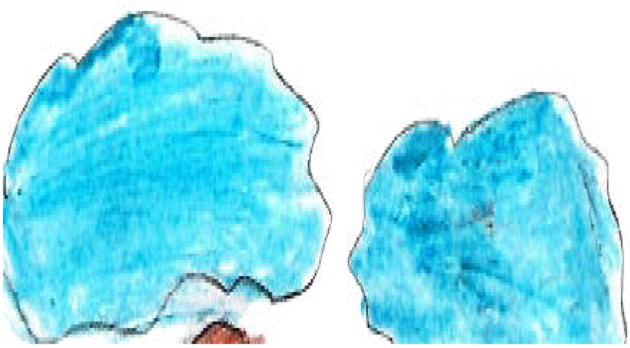

चित्र – रमेश जावा

मेरे गाँव आया बादल।
अब सबको हर्षाया बादल।

हवा का प्रिय मित्र बन,
मदमस्त हो इतराया बादल।

जब भी मन किया उसका,
पेड़ों को नहलाया बादल।

गड़–गड़ की ध्वनि वाला,
देखो ढोल बजाया बादल।

हम बच्चों को अपने संग,
आज खूब नचाया बादल।

पता – छत्तीसगढ़

कागज़ की नाव
डॉ. सत्यवान सौरभ

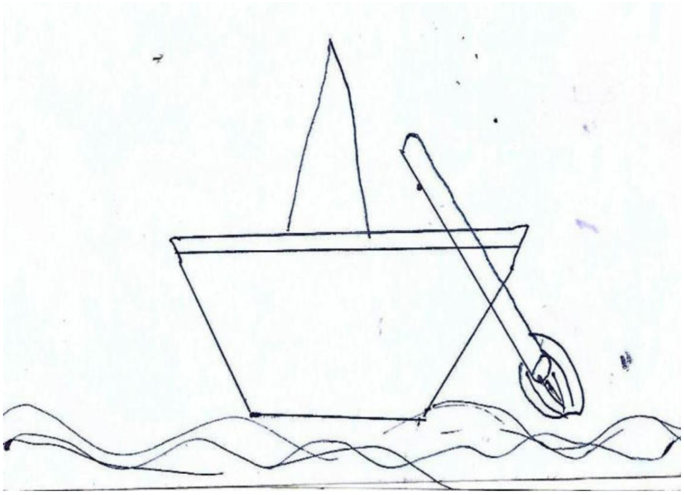

चित्र – अवनी श्रीमाली

वर्षा–जल में चलो नहाएँ,
कागज वाली नाव चलाएँ।
बूँदें टपकतीं, गातीं,
छोटी–छोटी लहरें लातीं।

देखें कौन है जीत पाता,
नाव बहा आगे ले जाता।
छोटी नाव, बड़ी खुशी,
मिट्टी की खुशबू भी मिली।

बारिश का संगीत सुनें,
मस्ती के कुछ खेल चुनें।
कागज की नाव बहती जाए,
सपनों की राह दिखाती जाए।

नाव में बैठो, हवा संग जाओ,
नदिया की कहानी सुनाओ।
छोटी–छोटी बातें करें,
हर फुहार को गले लगाएं।

खुशियों की बूंदें बिखराएँ,
हर दिल को गीत सुनाएँ।

पता – कौशल्या भवन, भिवानी, हरियाणा

पौध लगाएँ
गौरीशंकर वैश्य विनम्र

चित्र – राम भादानी

आओ! मिलकर पौध लगाएँ।
हरा–भरा परिवेश बनाएँ।

पेड़ों पर चिड़ियाँ हैं आतीं,
चूँ–चूँ मीठा गाना गातीं।
पौधे शुद्ध वायु देते हैं
रिमझिम–रिमझिम वर्षा लाएँ।

दूर–दूर तक हरियाली है।
चहुँदिश फैली खुशहाली है।
गाँव–गली. विद्यालय. घर में
पौध–रोपण अभियान चलाएँ।

गमलों में भी फूल खिलाएँ,
छोटी बगिया खूब सजाएँ
नित आएँगे भौंरे–तितली
उन्हें देखकर मन बहलाएँ।
आओ, मिलकर पौध लगाएँ।

पता – 117 आदिलनगर, विकासनगर, लखनऊ

किताबों में चिड़ियाँ चहचहाती हैं
डॉ राकेश चक्र

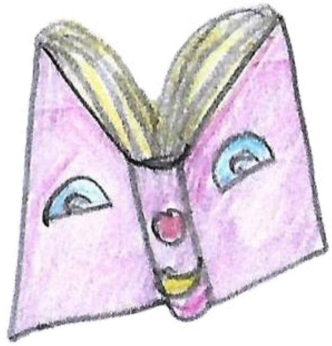

किताबों में चिड़ियाँ चहचहाती हैं।
किताबों में लोरियाँ गुनगुनाती हैं।।

किताबों में झरने गीत गाते हैं।
किताबों में खेत लहलहाते हैं।।

किताबों में परियाँ बतियाती हैं।
किताबों में पर्वत, वन घाटी हैं।।

किताबों में चंद्रमा आकाश है।
किताबों में ज्ञान का प्रकाश है।।

किताबें मित्रता निभाती हैं।
किताबें प्यार से सहलाती हैं।।

किताबों में ज्ञान का भंडार है।
किताबों में सारा संसार हैं।।

किताबें दुखों से उबारती हैं।
किताबें आरती उतारती हैं।।

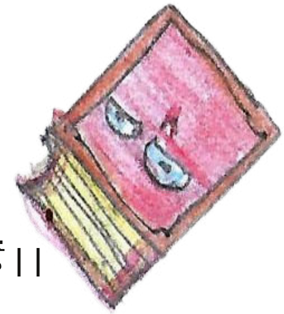

किताबों में विज्ञान के राज हैं।
किताबों में जन–जन की आवाज हैं।।

किताबें मेरी सच्ची सहेली हैं।
किताबें बड़ी भोली अलबेली हैं।।

चित्र – मीना सुथार

किताबों से मित्रता नहीं करोगे।
किताबों से अब भी क्या डरोगे।।

पता– 90 बी, शिवपुरी, मुरादाबाद उ.प्र

ओले पड़ने की है देरी
रोचिका अरुण शर्मा

मुझको कोई छतरी दे दो,
बहुत जोर से बारिश है।
आधा तो मैं भीग गया हूँ,
हथेलियों में खारिश है।।

बरसाती जूते भी ला दो,
सड़कें ताल–तलैया हैं।
छपाक छप–छप करता आऊँ,
गलियाँ भूल–भुलैय्या हैं ।।

बस्ता, टिफिन भीग गया है,
और किताबें सीली हैं ।
पंखे नीचे उन्हें सुखाऊँ,
हुई जुराबें गीली हैं ।।

बिजली तड़–तड़ तड़क रही है,
घम–घम बादल गरजे हैं।
ओले पड़ने की है देरी,
मानो सर पर कर्जे हैं।।
गर्म जलेबी और कचौरी,
मुँह में पानी आया है।
बड़ा–पाव, कांदा–भज्जी से,
मन मेरा ललचाया है।।

मूंग पकौड़ी फुदक–फुदक कर,
बीच कड़ाही नाचे है।
मेरे पेट में कूदें चूहे,
भरने लगे कुलाचे हैं।।

मजा भीगने में तो आये,
स्कूल भी जरूरी है।
छुट्टी वाले दिन भीगेंगे,
सब तैयारी पूरी है।।

पता – चेन्नई, तमिलनाडू

उड़ाए हाथी ने चिप्स
डॉ. प्रदीप कुमार मुखर्जी

होते बच्चे चिप्स के चटोरे,
उन्हें बड़े चाव से उड़ाते सारे।
लेकिन बिल्ली, कुत्ते और बंदर भी
है चिप्स के दीवाने,
घुस जाते वे घरों और जनरल स्टोरों में
खूब तबियत से चिप्स को उड़ाते।
लेकिन हाथी भी अब हो गए हैं शौक़ीन
चिप्स उड़ाने के मामले में,
यह बात शायद आप लोगों की
न उतर पाए गले में।
थाईलैंड में एक हाथी ने

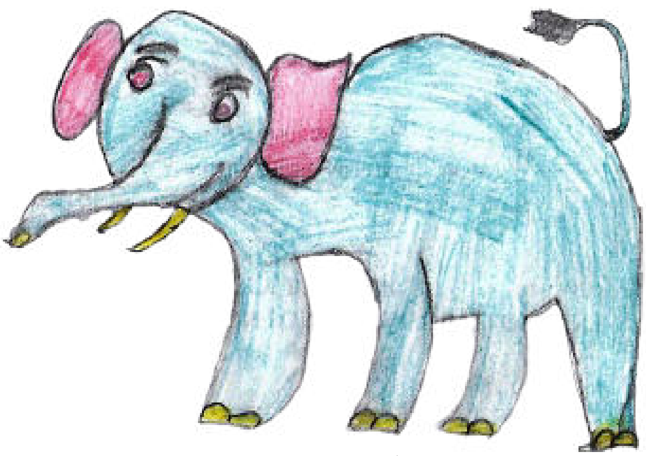

चित्र – मदन जोशी

घुसकर जनरल स्टोर की दुकान से,
उड़ाए चावल के बने कुरकुरे और चिप्स
निकल गया फिर शान से बाहर दुकान से।

पता– 43, देशबंधु सोसाइटी,
15, पटपड़गंज, दिल्ली

खेलों की महत्ता
अशोक आनन

बेटा ! तुझको पढ़ते–पढ़ते
हो गई अब तो शाम।
तू भी खेल ज़रा कहीं आ
बुलाने आया राम ।

बेटा ! मुझको खूब पता है
खेलों की जो महत्ता।
इनके कारण स्वस्थ हमारा
तन–मन अक्सर रहता।

इनसे तन–मन ताज़ा रहता
बदन में फूर्ति आती।
ये ही दिल की धड़कन बेटा !
ये ही हमारी थाती।

चित्र – वसु रील

चरण सफलता उनके चूमे
प्यार इन्हें जो करता।
चाहे जितना खेलों फ़िर भी
मन कभी नहीं भरता।

पता – मक्सी जिला, शाजापुर, मध्यप्रदेश

चिड़िया का चश्मा

नरेश मेहन

एक चिड़िया का परिवार लंबे समय से वातानुकूलित कमरे में रह रहा था। बहुत आराम था, वहां पर। न सर्दी लगती और ना ही गर्मी लगती। मकान मालिक के एक नौजवान लड़का था। वह कम्प्यूटर पर सारे दिन काम करता था। उसकी छोटी बहन सारे दिन टी.वी. देखती और मोबाइल चलाती रहती थी।

एक दिन दोनों भाई–बहन शोर मचा रहे थे। उनका ए.सी. खराब हो गया था। चिड़िया को भी परिवार सहित बहुत मुश्किल से उड़ कर छत की मुंडेर पर बैठना पड़ा। छत की मुंडेर पर बैठी वह जोर–जोर से शोर मचा रही थी। ओहो ओहो यहां तो गर्मी बहुत है। मैं तो मर जाऊंगी। इससे एक चिड़िया जो दूर बैठी थी उसका शोर सुनकर उसके पास आ गई। उसने ध्यान से देखा। यह मोटी ढुलमुल भूरी सी चिड़िया कौन है ?

चित्र – पाथ आचार्य

एक बुजुर्ग चिड़िया ने उसे पहचान लिया। अरे ! यह तो भूरी है। मुझे पहचानो भूरी बताओ मैं कौन हूं ? भूरी ने कहा– बहन मेरे पास आओ मुझे दूर से दिखता नहीं है। अरे मैं तुम्हारी मौसी की बेटी गोरी हूं, अरे और पास आओ। हां अब पहचाना गौरी बहन हो। गोरी ने कहां भूरी तुम्हें यहां पर गर्मी बहुत लग रही है। चलो उस पेड़ पर चले। वहां पर मेरा घर है। वहां पर बहुत अच्छी शुद्ध हवा आ रही है।

गोरी बहन मैं और मेरे बच्चे व तेरे जीजा जी वहां तक उड़ ही नहीं सकते। हम तो छत की मुंडेर तक भी मुश्किल से बैठ–बैठ कर पहुंचे हैं। ओह भूरी बहन उड़ना तो हमारा धर्म है। और आप लोग उड़ना भी भूल गए। इतने में भूरी का छोटा बच्चा बोला। गोरी मौसी मैं बताता हूं हमारा यह हाल कैसे हुआ।

हम सभी लंबे समय से वातानुकूलित कमरे में रह रहे हैं। सारा दिन हम टीवी देखते हैं। पापा और मम्मी टीवी के सारे सीरियल व मैं क्रिकेट के सारे मैच देखता हूं। पहले तो हम टीवी के सामने वाली अलमारी के ऊपर बैठकर देखते थे। अब दूर से साफ नहीं दिखता। हम और नजदीक चले गए। अब तो नजदीक से भी मजा नहीं आता। हम बीच में पड़े किताबो के रैक पर बैठ गए। वहां पर मालिक का एक पुराना चश्मा खुला रखा हुआ था। हमने मालिक के चश्मे से टीवी देखा तो हैरान रह गए। अरे इससे तो बहुत साफ दिखता है। अब हमारा परिवार चश्मे के पीछे बैठ कर आराम से टीवी देखता था।

भूरी का छोटा बच्चा बीच में बोला– मौसी ये पेड़ कैसे होते हैं। हमने तो देखे ही नहीं जन्म से टीवी ही देख रहे हैं। गोरी ने कहा तुम प्रकृति के जीव हो। मगर प्रकृति से दूर होते जा रहे हो। यह हमारे लिए खतरनाक बात है। एक दिन तुम्हें ब्लड प्रेशर, शुगर जैसी बीमारियां हो सकती हैं। समझी ।

इतने में एक बिल्ली का बच्चा जो उनकी बातें सुन रहा था। भाग –भाग अपनी मां के पास गया। मम्मी– मम्मी आज शिकार अपने आप मिल गया। चार–पांच मोटी–मोटी चिड़िया मुंडेर पर बैठी है। वे न तो उड़ सकती है। ना ही पूरी तरह देख सकती है। हम उन्हें आराम से पकड़ सकते हैं।

बिल्ली बोली –नहीं बेटे, वह अपनी आदतों की मारी हुई है। हम इंसानों की तरह मजबूरी का नाजायज फायदा नहीं उठा सकते। हमारे भी कुछ सिद्धांत है। वह चिड़िया प्रकृति के साथ नहीं रही। इसलिए सजा भुगत रही है।

भूरी का बच्चा बोला– माँ अब हम मनुष्य के बनाए घर में नहीं रहेंगे। हम अपने प्रकृति द्वारा दिए गए घर 'पेड़' पर परिवार सहित रहेंगे। जिससे हम सब स्वस्थ रह सके और में अपने भाई बहनों के साथ खेल सकू ।

पता – हनुमानगढ़

पंद्रह अगस्त आया
महेन्द्र कुमार वर्मा

पंद्रह अगस्त आया,
खुशियाँ अपार लाया।

झंडा तिरंगा नभ पे,
सभी जनों को भाया।

ये देश है हमारा,
सभी ने गीत गाया।

देश के सैनिकों ने,
रिपु को सदा हराया।

अनुराग है सभी में,
कोई नहीं पराया।

सारे जनों से नाता ,
रिश्ता सदा निभाया।

गीत खुशी के लाया ,
पंद्रह अगस्त आया।

पता – बी–68 ओल्ड मिनाल
रेसीडेन्सी, जे के रोड, भोपाल

प्रकृति की पुकार
वरुण देव

चित्र – अंकिता शर्मा

बगीचे में बैठा मै जब,
हवा के झोंके खा रहा था।
पर्यावरण की हालत देख,
मन ही मन घबरा रहा था।

नदिया जो साफ बहती थी,
वे नदिया दूषित हो गई।
वह मधुर निर्मल धारा ,
न जाने किधर खो गई ।

जानवरों के घर जंगल को,
मानवों ने काट दिया।
उन निर्दोष प्राणियों पर,
बहुत बड़ा अत्याचार किया।
आकाश का रंग पड़ा फीका,
सोच रहा मै चुप चाप बैठा।
अब भी कुछ कर सकते है,
गलतीयो को सुधार सकते है।

बना सकते ऐसी दुनिया,
जिसमें साँसें हों आसान,
जहाँ हो बादल, चाँद, सितारे,
और खुले हों नीले आसमान।

कक्षा–10
गुरुकुल शिक्षा निकेतन , पटना, बिहार

ताकत

पूनम पांडे

एक बार की बात है। तेज आंधी और वायु एक दूसरे से मिले। आंधी ने मंद वायु से कहा, 'शक्तिमान बनने में ही गौरव है। मैं जब भी अपने आवेश के साथ चलती हूं, तो पेड़ बेचारे अपनी जड़ से उखड़कर ही गिर जाते हैं। तालाबों का पानी उछलने लगता है, पौधे भी जमीन से निकलकर बिखर जाते है, और प्राणियों की तो मेरे सामने ठहरने की हिम्मत ही नहीं होती। सभी अपना बचाव करने के लिए छिपते फिरते हैं।

देखो, जिंदगी ऐसी ही जीनी चाहिए कि लोग हमारा लोहा माने और हमसे हरदम डरते रहें। मंद वायु बोली– तुम सामर्थ्यवान हो। जो चाहो वह कर सकती हो, पर मुझे तो इसमें ही आनंद आता है। मैं धीमी चलती हूं ताकि किसी को कष्ट न हो, निरंतर बहती रहती हूं ताकि सेवा के आनंद से क्षणभर के लिए भी वंचित न रहना पडे। मुरझाये और क्लांत चेहरों पर शीतल सुगंधित पंखा झेलते हुए जो संतोष प्राप्त होता है, मेरे लिए वही सब कुछ है। तुम्हें अपनी शक्ति का हर्ष प्रिय लगता है, पर मेरे लिए तो

चित्र – दिव्यांशी शर्मा

सेवामुक्त समर्पण ही सब कुछ है। यह बात सुनकर आंधी लज्जित हुई और अपनी जगह ठहर गई एक साधारण हवा ने तो आज उसे आईना ही दिखा दिया था।

पता – पुष्कर रोड, कोटरा, अजमेर

बच्चों का कोना

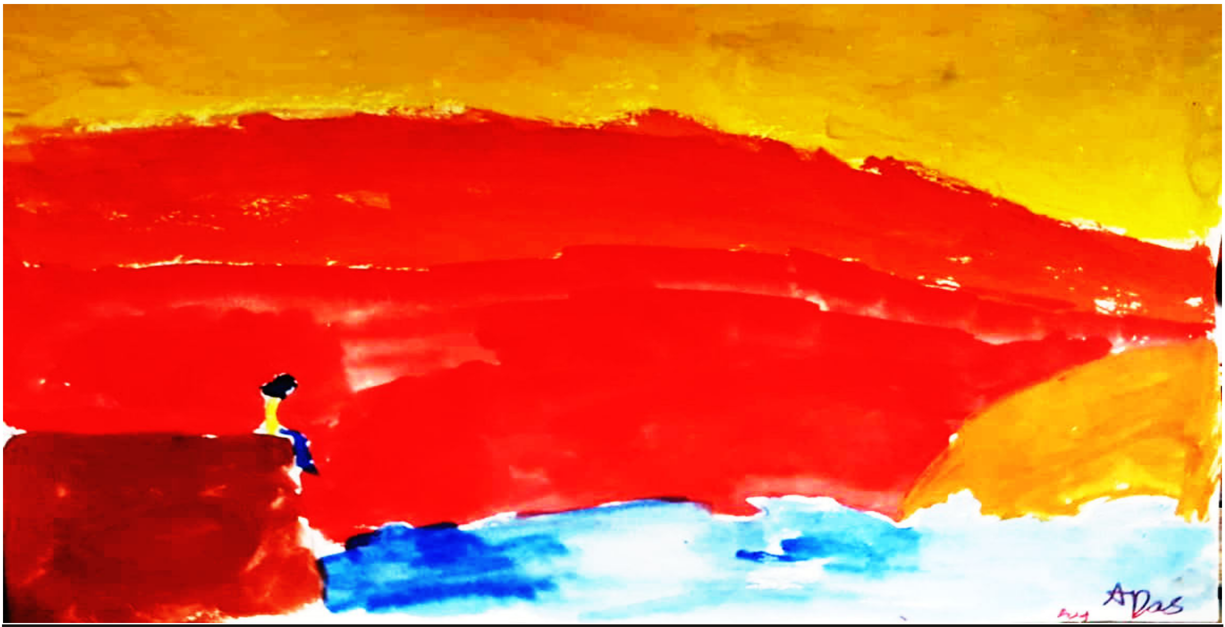

अयानदास, मुम्बई

शशिकला जोशी, बीकानेर

अमयरा, दिल्ली

नुपूर व्यास, बीकानेर

शिवम, बीकानेर

दुर्गेश नन्दनी, जैसलमेर

डिम्पल, बीकानेर

भूल-भूलैया

चांद मोहम्मद घोसी

अरे ऽ ऽ यह क्या ? तितली रानी मोर के पंखों के बीच फंस गई! बाहर निकलने के लिए छटपटाती तितली को प्रिय बच्चों, सही मार्ग से बाहर निकालिए.

पता – नन्हा बाजार, मेड़ता सिटी

दुनिया के देश

साइप्रस

संजय पुरोहित

हेलो दोस्तों ! कैसे हैं आप सब ? हमें पता है कि खूब खूब छुट्टियों को एन्जॉय करने के बाद अब नयी ताजगी के साथ आप स्कूल जा रहे हैं। दोस्तों से इतने लम्बे समय के बाद मिलना कितनी खुशी देता है। है ना ? आपको इस नये सेशन के लिये खूब खूब बेस्ट विशेज। पिछले साल की तरह इस साल भी खूब पढ़िये। मेहनत कीजिये। होमवर्क समय पर पूरा कीजिये। यदि कोई टॉपिक समझ में नहीं आए तो बार बार अपने टीचर से पूछिये। यानी पढ़ाई में नो ढिलाई। तो चलिये आज के सफर को शुरू करते हैं एक और देश की सैर के साथ। सैर की सैर और जी.के. का जी.के.। आज हम घूम रहे हैं भूमध्य सागर के तीसरे बड़े द्वीप देश साइप्रस में।

साभार – www.europ-data.com

साइप्रस अपनी नेचुरल ब्यूटी, हिस्ट्री और कल्चर के कारण पूरी दुनिया में एक अलग ही स्थान रखता है। इसके नक्शे को यदि आप गूगल मेप्स से देखेंगे तो समुद्र के बीच एक पत्ते की तरह नजर आयेगा। ग्रीक साइप्रस कवि लियोनिदास मैलेनिस ने इसे 'समुद्र में फेंका गया एक सुनहरा–हरा पत्ता' कहा। साइप्रस का इतिहास ग्रीस के इतिहास से गहरा जुड़ा हुआ है। प्राचीन ग्रीक माईथोलॉजी के अनुसार साइप्रस द्वीप देवी अफ्रोडाइट से जुड़ा हुआ है जो, कहा जाता है, पाफोस के तटों के पास समुद्र के फेन से पैदा हुई थी। यही पाफोस खुद यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल है। यहां प्राचीन खण्डहरों और

अन्य स्ट्रक्चर्स की भरमार है। मोजेक के साथ विला के अवशेष, ओडियन एम्फी थियेटर और किंग्स के मकबरे लोगों की उत्सुकता का केन्द्र बने हुए हैं।

यह जंगली मौसम और ज्वालामुखियों की धरती है। साइप्रस में उंचे पहाड़ हैं, उपजाऊ घाटियां हैं, चौड़े समुद्र है। यह यूरोप और एशिया के बीच स्थित है। साइप्रस को वीनस का जन्म स्थान माना जाता है। यहां प्राचीन मंदिर हैं। कांस्य युग की कब्रें हैं और यूनेस्को की वर्ल्ड हैरिटेज भी है। साइप्रस 1960 में स्वतंत्र हुआ था। इससे पहले 1925 से यह शाही उपनिवेश था। और 2004 से यूरोपिय यूनियन का सदस्य बना। केवल 13 लाख की जनसंख्या वाला यह देश रिपब्लिक है। इसके एक भाग को तुर्की ने कब्जा किया हुआ है। इसे तुर्की साइप्रस कहा जाता है। साइप्रस के आसपास के देशों में तुर्की, सीरिया और ग्रीस है। साइप्रस की राजधानी निकोसिया है। यहां ग्रीक और तुर्की भाषा आधिकारिक भाषा के रूप में मान्यता प्राप्त है। धर्म की यदि बात करें तो साइप्रस के सत्तर प्रतिशत लोग इस्टर्न ऑर्थोडॉक्स ईसाई हैं। साइप्रस की साक्षरता दर निन्यानबे प्रतिशत है। करंसी के रूप में यूरो को मान्यता दी गई है। साइप्रस का राष्ट्रगान 'हाईम टू लिबर्टी' है। यहां आपको यह भी बताते चलें कि ग्रीस और साइप्रस का राष्ट्रगान एक जैसा ही है। अक्टूबर के पहले दिन को साइप्रस अपना स्वतंत्रता दिवस मनाता है। जैतून की शाखा साइप्रस का राष्ट्र प्रतीक है। साईप्रस का फ्लेग साइप्रस के इतिहास का एक महत्वपूर्ण और प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व करता है। झंडे में सफेद बैक ग्राउण्ड पर सेंटर में साइप्रस द्वीप की एक तांबे–नारंगी रूपरेखा है। नक्शे के नीचे जैतून की हरी शाखाओं का एक जोड़ा है, जो शांति का प्रतीक है। दुनिया में केवल दो देश हैं जिनके झंडे पर उनके नक्शे हैं और साइप्रस इनमें पहला है।

साइप्रस के बारे में कहा जाता है कि पहली शताब्दी ईसा पूर्व मार्क एंटोनी ने इसे फेमस क्लियोपेट्रा को अपने प्रेम के उपहार के रूप में दिया था। यदि व्यापार की बात करें तो साइप्रस में वाइन प्रोडक्शन पांच हजार सालों से हो रहा है। यह देश अपनी प्रचुर धूप के लिये भी प्रसिद्ध है। साल में तीन सौ से लेकर 340 दिनों तक साइप्रस में धूप रहती है। साइप्रस के समुद्र तट बहुत ही सुंदर हैं। द्वीप के रेतीले किनारे, क्रिस्टल क्लियर पानी और विविध तटीय परिदृश्य इसके समुद्र तटों पर दुनिया भर के पर्यटकों को खींच लाते हैं। साइप्रस में एक झील है–लार्नाका। यह नमक की झील है। इस झील में लाखों फ्लेमिंगों प्रवास करते हें। इन पक्षियों के लिये यह स्वर्ग के समान है। साइप्रस अपने व्यापारिक वातावरण, एक महत्वपूर्ण जियोग्रॉफिकल प्लेस के कारण दुनिया भर के बिजनेस और आई.टी. कम्पनियों के लिये आकर्षक स्थान है। साइप्रस की राजधानी

निकोसिया को दुनिया का आखिरी विभाजित शहर कहा जाता है। इस शहर का आधा हिस्सा ग्रीक साईप्रियट्स के नियंत्रण में है जबकि दूसरा हिस्सा तुर्की साईप्रियट्स के कन्ट्रोल में है। यहां हिस्टोरिकल म्यूजियम और लवकैश टावर जैसे हिस्टोरिकल प्लेस हैं। निकोसिया में एक बर्फीली विभाजन रेखा भी है जो इसे और भी महत्वपूर्ण बनाती है। क्र्येनिया एक खूबसूरत बंदरगाह है जो तुर्की के कब्जे वाले साइप्रस में है। यह अपने मध्यकालीन किलों और सुंदर समुद्र तटों के लिये प्रसिद्ध है। क्र्येनिया का किला पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र रहता है। साइप्रस का ट्रोडोस पर्वत क्षेत्र नेचुरल ब्यूटी और हिस्टोरिकल डेस्टिनेशन के रूप में प्रसिद्ध है। यहां की खूबसूरत वादियां, ठण्डे झरने और प्राचीन चर्च बहुत आकर्षक हैं। यूनेस्को द्वारामान्यता प्राप्त कई बीजान्टिन चर्च और मठ यहीं पर स्थित हैं।

सालामीस साइप्रस का एक ग्रीक शहर है। यहां के खण्डहर प्राचीन सभ्यता के अद्भुत उदाहरण हैं। साइप्रस का सी. एफ. एक सुंदर बॉटनिकल गार्डेन है जहां साइप्रस के पारंपरिक पौधे और औषधीय पौधों की हजारों किस्में देखी जा सकती हैं। साइप्रस में बहुत सारे दुलर्भ प्राणी भी रहते हैं। मुफलॉन नामक भेड़ तो केवल साइप्रस में ही पाई जाती है। ग्रीन सी टर्टल नामक समुद्री कछुए लारा बे और अगिया नापा के तट पर पाये जाते हैं। ये कछुए साइप्रस के तटों पर गर्मियों में अण्डे देने के लिये आते हैं। इनकी सुरक्षा के लिये इन क्षेत्रों को प्रोटेक्टेड किया गया है। साइप्रस में 380 से अधिक पक्षियों की प्रजातियां पाई जाती हैं। माईग्रेटरी बर्ड रूट होने के कारण पक्षी हजारों–लाखों की तादाद में आते हैं। फ्लेमिंगो, ग्रिफॉन वल्चर, साइप्रियन व्हीटलर इनमें खास हैं। साइप्रस में सांपों की 8 प्रजातियां भी पाई जाती है। इनमें ब्लंट नोज्ड वाईपर और कैट स्नेक उल्लेखनीय हैं। इनके अलावा कई तरह की छिपकलियां, मैंढक लोमड़ी, खरगोश, जंगली बिल्ली भी साइप्रस के जंगलों में पाई जाती है। साइप्रस की कृषि में अंगूर, आलू, संतरा और जैतून सबसे अधिक स्थान रखता हैं। साइप्रस आलू, साइट्रस फल, हेलूमी चीज और वाइन का एक्सपोर्टर है। चीज, वाइन, जैतून का तेल और पर्यटन साइप्रस की अर्थव्यवस्था के मुख्य उद्योग हैं।

तो यह थी प्यारे से देश साइप्रस की प्यारी सी शॉर्ट जर्नी। उम्मीद करते हैं कि आपको पसंद आई होगी। जीवन में यदि आपको कभी साइप्रस जाने का मौका मिले तो आपका आज का पढ़ा अवश्य ही काम आयेगा। अगले अंक में किसी और देश की यात्रा करेंगे। तब तक के लिये बाय–बाय।

पता – सपीम सूरसागर, बीकानेर

एकता में बल

डॉ. रंजना जायसवाल

अगले महीने स्पोर्ट्स डे था। शहर के सभी स्कूल इसमें भाग ले रहे थे। सभी स्कूलों में जोर–जोर से तैयारी चल रही थी। निखिल की प्रिंसिपल मैम ने सभी टीचर्स को आदेश दे रखा था कि वह स्कूल के बाद बच्चों को ट्रेनिंग दे। इस बार अपने स्कूल में ज्यादा से ज्यादा पुरस्कार आने चाहिए। बच्चों में भी बड़ा उत्साह था। वे दिन–रात मेहनत कर रहे थे। बच्चे ट्रेनिंग के दौरान अच्छा प्रदर्शन भी कर रहे थे। सभी खेलों में पुरस्कार जीतने की पूरी संभावना थी पर रिले दौड़ में बात नहीं बन पा रही थी। टीचर्स भी इस बात को समझ नहीं पा रहे थे कि प्रैक्टिस में कहाँ कमी रह जा रही थी । इस रेस में अलग–अलग क्लास के होनहार और तेज बच्चों को रखा गया था पर उनमें तालमेल नहीं बैठ रहा था। कभी रिले रेस की डंडी हाथ से छूट जाती तो कभी वे आपस में सामंजस बिठा नहीं पाते और समय ज्यादा लग जाता। इस रेस में एक–एक मिनट कीमती था। टीचर्स बार–बार बच्चों को यही समझाने की कोशिश कर रहे थे पर नतीजा अच्छा नहीं निकल रहा था। सभी बच्चे एक ही कक्षा के थे पर उनके सेक्शन अलग–अलग थे। एक कक्षा में होने के कारण उनमें एक प्रतियोगिता हमेशा ही बनी रहती थी। वे एक–दूसरे को थोड़ा कम ही पसंद करते थे। यह बात प्रिंसिपल मैम तक पहुँची। उन्होंने इस विषय में स्पोर्ट्स टीचर से बात की। उन्हें मामला समझ में आ गया था। रिले रेस में भाग लेने वाले बच्चों को उन्होंने अपने कमरे में बुलाया। बच्चे हैरान थे आखिर ऐसी क्या बात थी कि मैम ने उन्हें अपने कमरे में बुलाया है। कोई नहीं जानता था कि आखिर मैम क्या कहना चाहती हैं ?

"मे आई कम इन मैम ?"

प्रिंसिपल मैम कोई जरूरी काम कर रही थी। बच्चों को दरवाजे पर देखा वह अपनी सीट से खड़ी हो गई। "आओ–आओ, मैं तुम्हारा ही इंतजार कर रही थी।"

सारे बच्चों ने एक–दूसरे की ओर देखा। उनकी आँखों में एक डर था। "मैम! आपने बुलाया था ?" निखिल क्लास मॉनिटर था, उसने डरते–डरते पूछा। "और तुम लोग की प्रेक्टिस कैसी चल रही है ?" "बहुत अच्छी मैम!" निखिल के शब्द यह कहते–कहते लड़

खड़ा गए थे। मैम के सामने झूठ बोलना इतना आसान नहीं था। मैम की आँखें हर चीज पकड़ लेती थी। मैम ने उन्हें बैठने का आदेश दिया। आओ बच्चों तुम्हें मैं एक कहानी सुनाती हूँ।

बच्चे आश्चर्य से एक—दूसरे की ओर देखने लगे। क्या मैम ने उन्हें कहानी सुनाने के लिए बुलाया था ? मैम का यह रूप उन्होंने पहले कभी नहीं देखा था। मैम ने कहानी सुनानी शुरू की। बहुत समय पहले की बात है, एक जंगल में बहुत सारे जानवर रहते थे। जंगल के बीचों—बीच एक नदी बहती थी। नदी के चारों तरफ घने हरे और बड़े—बड़े पेड़—पौधे लगे हुए थे जिस पर दिन भर बंदर इधर से उधर कूदते रहते थे। उस नदी में बहुत सारे मेंढक और मछलियाँ रहते थे। मेढकों का परिवार काफी बड़ा था और उन्हें इस परिवार पर काफी गर्व भी था। एक दिन एक मोटा सा अजगर रास्ता भटक कर उस जंगल में आ गया। सारे जानवर इधर—उधर भागने वालों पर मेंढकों के सरदार ने कहा— "हमें इस सांप से डरने की जरूरत नहीं, हम इसका डट कर सामना करेंगे।" अजगर बहुत चालाक था, वह समझ गया था मेंढ़कों में आपस में बड़ी एकता है और उन्हें डराना आसान नहीं होगा। उसने मेंढकों से दोस्ती कर ली। सभी मेंढक सीधे और सरल स्वभाव के थे। वह अजगर की मीठी—मीठी बातों में आ गए। एक दिन अजगर ने कहा,

चित्र — राम भादाणी

"अरे तुम लोग इस जंगल में क्यों रह रहे हो पहाड़ी की उस पार इससे भी सुंदर जंगल है। वहॉ इससे भी ज्यादा सुंदर पेड़—पौधे और नदियॉ हैं। जहॉ दिन भर तुम्हारे जैसे न जाने कितने मेंढक खेलने—कूदते रहते हैं। मेंढकों को बड़ा आश्चर्य हुआ। एक बुजुर्ग मेंढक ने कहा "हम अपने घर में ही अच्छे हैं। यहॉ सब हमारे दोस्त हैं। हमें तुम्हारे साथ नहीं जाना।"

सभी ने बूढ़े मेंढक की हॉ में हॉ मिलाई। अजगर सोच में पड़ गया कि उनकी एकता को आखिर कैसे तोड़ा जाए ? अजगर ने मेंढकों के सरदार से धीरे से कहा "तुम क्यों इन सब के चक्कर में पड़े हो ? तुम मेरे साथ चलो और एक अच्छी जिंदगी जीओ। आओ तुम्हें मैं एक सुंदर दुनिया में लेकर चलता हूँ।" मेंढकों का सरदार अजगर की चिकनी—चुपड़ी बातों में आ गया। उसने कहा "तुम लोग यहीं रहो सबसे पहले मैं पहाड़ के उसे पार जाऊँगा और जंगल को देखकर आऊँगा। अगर मुझे जंगल पसंद आया है तो तुम सब को भी एक—एक करके बुला लूँगा।" अजगर मन ही मन बहुत खुश था उसने मेंढकों के सरदार को बेवकूफ बना लिया था। सरदार अजगर के साथ पहाड़ी के उस पार जंगल की ओर चल पड़ा, जैसे ही उसने पहाड़ी को पार किया। अजगर ने हॅसते हुए कहा "वह मजा आ गया आज तो मुझे पेट भर भोजन करने को मिलेगा।"

सरदार को अपनी गलती का एहसास हो चुका था कि वह अब पूरी तरह फंस चुका है। बचने के लिए उसके पास कोई रास्ता नहीं था। वह अजगर के सामने हाथ जोड़ कर गिड़गिड़ाने लगा पर अजगर ने उसकी एक नहीं सुनी और सरदार को मुँह में रखा और निगल गया। दो–चार दिन बीतने के बाद अजगर को फिर भूख लगी। तब वह फिर पुराने जंगल में लौट आया और उसने कहा "भाइयों! तुम्हारे सरदार को जंगल बहुत पसंद आया है और उसने कहा है कि तुम सभी मेरे साथ जंगल चले आओ। उसने मुझे तुम लोगों को लाने के लिए भेजा है।"

बुजुर्ग मेंढक ने उन्हें फिर से समझाया "हम जब तक इस जंगल में है तब तक सुरक्षित है। अगर हम उसे जंगल में गए तो उसे पराए घर में हम कितने सुरक्षित होंगे कोई नहीं जानता? हमारा साथ होना ही हमारी ताकत है।"

बुजुर्ग मेंढक के लाख समझाने के बाद भी मेंढकों ने उसकी बात नहीं सुनी। मेंढकों ने सोचा अकेली सरदार ही सारे मजे क्यों लूटे, हमें भी पहाड़ी के उसे पार चलना चाहिए और जब सरदार ने यह आदेश दिया है तो फिर देर किस बात की। अजगर ने अपनी पीठ पर सारे मेंढकों को बिठाया और पहाड़ी के उसे पार चला गया। उसने एक–एक करके सारे मेंढकों को खा लिया।

सारे बच्चे बड़े ध्यान से इस कहानी को सुन रहे थे। प्रिंसिपल मैम ने कहा "इस कहानी से तुम्हें क्या शिक्षा मिलती है?"

मैम की बात सुन बच्चे एक–दूसरे का मुँह देखने लगे। "बच्चों! उन सब ने बुजुर्ग मेंढक की बात मानी होती और अपना–अपना फायदा ना सोचा होता तो वो सारे मेंढक शायद जिंदा होते।" निखिल ने खड़े होकर कहा "मैम! आपकी कहानी बहुत अच्छी थी पर ?" निखिल कुछ कहता उससे पहले ही प्रिंसीपल मैम ने कहा "मैं जानती हूँ तुम्हारा अगला सवाल क्या होगा। तुम सब रेस में बहुत अच्छा कर रहे हो पर तुम सब में तालमेल नहीं है। तुम सब अलग–अलग अपना–अपना खेल खेल रहे हो पर यह समय अपनी एकता को दिखाने का समय है। निखिल की टाइमिंग अच्छी है, आदित्य की स्पीड तो गौरव की प्लानिंग, अगर ये तीनों एक साथ मिल जाए तो क्या होगा ?"

तीनों बच्चे एक साथ बड़े जोश के साथ बोले, "फिर तो हमें कोई हरा ही नहीं सकता।" अचानक उन्हें कुछ याद आ गया। वे चुपचाप खड़े हो गए। "तुम लोगों को मैंने किस लिए बुलाया था इस सवाल का जवाब तुमने खुद ही दे दिया है। अब तुम ही बताओ आगे क्या सोचा है ?" निखिल, आदित्य और गौरव ने एक–दूसरे का हाथ जोर से पकड़ा। "मैम अब ये ट्रॉफी तो हमारे स्कूल को ही मिलेगी।" निखिल, आदित्य और गौरव के गिले–शिकवे सब दूर हो चुके थे और अब वो एक नई शुरुआत के लिए आगे बढ़ रहे थे।

पता –छोटी बसही, मिर्जापुर, उत्तर प्रदेश

जाने आकाश के बारे में

संजय श्रीमाली

बच्चों खगोल विज्ञान की बात अनन्त है। तथा यह बहुत ही रोचक है। प्रतिमाह कुछ न कुछ खगोलिय घटनाएं घटती रहती है। इन घटनाओं में पूर्णिमा, अमावस्य एवं विभिन्न ग्रहों के बारे में खगोलिय बदलाव को हम देखते एवं पढ़ते है। चलों इस माह क्या विशेष है इसके बारे में जानते है।

साभार www.stock.adobe.com

जैसा की आपको विदित है कि प्रत्येक माह पूर्णिमा आती है। तो इस माह इस माह भी 9 अगस्त को पूर्णिमा है। चंद्रमा पृथ्वी के विपरीत दिशा में स्थित होगा क्योंकि सूर्य और उसका चेहरा पूरी तरह से प्रकाशित होगा। यह चरण 07:56 यूटीसी पर होता है। इस पूर्णिमा को शुरुआती मूल अमेरिकी जनजातियों द्वारा स्टर्जन मून के रूप में जाना जाता था क्योंकि ग्रेट लेक्स और अन्य प्रमुख झीलों की बड़ी स्टर्जन मछलियाँ वर्ष के इस समय में अधिक आसानी से पकड़ी जाती थीं। इस चंद्रमा को ग्रीन कॉर्न मून और ग्रेन मून के नाम से भी जाना जाता है।

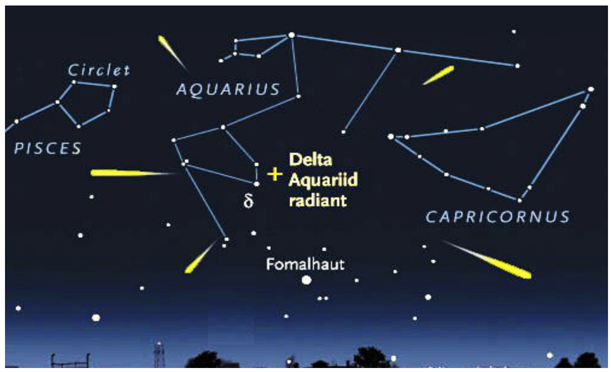

साभार www.hindustantimes.com

बच्चों उल्कापात आसमान की बहुत ही रोचक खगोलिय घटना है। इस घटना को हम आम भाषा में तारों को टूटना कहते है। इस माह 12, 13 अगस्त पर्सीड्स उल्कापात होगा। पर्सिड्स अवलोकन के लिए सबसे अच्छे उल्कापातों में से एक है, जो अपने चरम पर प्रति घंटे 60 उल्कापिंडों का उत्पादन करता है। इसका निर्माण धूमकेतु

स्विफ्ट–टटल द्वारा किया गया है, जिसे 1862 में खोजा गया था। पर्सिड्स बड़ी संख्या में चमकीले उल्काओं के उत्पादन के लिए प्रसिद्ध हैं। यह बौछार प्रतिवर्ष 17 जुलाई से 24 अगस्त तक चलती है। इस वर्ष यह 12 अगस्त की रात और 13 अगस्त की सुबह को चरम पर है। घटता हुआ गिबस चंद्रमा इस वर्ष सबसे चमकीले उल्काओं को छोड़कर सभी को रोक देगा। सबसे अच्छा दृश्य आधी रात के बाद किसी अंधेरी जगह से होगा। उल्काएं पर्सियस तारामंडल से विकीर्ण होंगी, लेकिन आकाश में कहीं भी दिखाई दे सकती हैं।

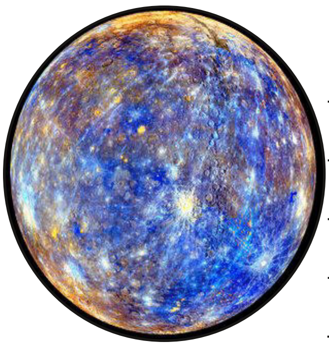

साभार www.naidunia.com

बच्चों आप जानते है कि बुध ग्रह हमारे सौर मण्डल का सबसे छोटा ग्रह है। तथा सूर्य से सबसे नजदीक का ग्रह है। बुध ग्रह सूर्य की परिक्रमा 88 दिनों में पूरी करता है। बुध पर मुख्य रूप सें हीलियम एवं हाइड्रोजन गैसे हैं। तथा यहां का तापमान दिन बहुत अधिक गर्म एवं रात को बहुत अधिक ठण्डा हो जाता है। दिनांक 19 अगस्त को बुध ग्रह को पश्चिमी बढ़ाव पर आसानी से देख सकते है। बुध ग्रह सूर्य से 18.6 डिग्री के अधिकतम पश्चिमी विस्तार तक पहुंचता है। यह बुध को देखने का सबसे अच्छा समय है। सूर्योदय से ठीक पहले पूर्वी आकाश में निचले ग्रह को देखें।

इस चंद्रमा को थंडर मून और हे मून के नाम से भी जाना जाता है।

इस माह 23 अगस्त अमावस्या है। चंद्रमा पृथ्वी के सूर्य के समान ही स्थित होगा और रात के आकाश में दिखाई नहीं देगा। आकाशगंगाओं और तारा समूहों जैसी धुंधली वस्तुओं का निरीक्षण करने के लिए यह महीने का सबसे अच्छा समय है क्योंकि इसमें हस्तक्षेप करने के लिए चांदनी नहीं होती है।

आकाश में ग्रहों की स्थिति
(13 जुलाई 2025)

ग्रह	उदय	अस्त	मध्याहन	स्थिति
बुध	5:08	18:20	11:43	दुर्बल
शुक्र	03:19	17:04	10:12	अच्छा
मंगल	09:27	21:30	15:28	अच्छा
गुरू	03:26	17:13	10:20	दुर्बल
शनि	21:32	09:28	03:30	अच्छा
यूरेनस	00:31	14:04	07:17	दुर्बल
नेपच्यून	21:30	09:21	03:31	दुर्बल

अजित फाउण्डेशन

प्रिय सदस्यों

आपको 'चहल-पहल' पढ़कर अच्छा लगा होगा। 'चहल-पहल' के पिछले अंको को पढ़ने हेतु आप अजित फाण्डेशन की वेब साईट https://ajitfoundation.net पर जाकर डाउनलोड कर सकते हैं। साथ ही अजित फाउण्डेशन पुस्तकालय में उपलब्ध पुस्तकों की सूचि https://www.libib.com/library लिंक पर देख सकते है और युवाओं के लिए होने वाली मासिक गतिविधियों की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

संस्था के सामुदायिक पुस्तकालय में पुस्तकें पढ़ने के साथ-साथ खिलौने, पेन्टिग एवं अन्य रोचक गतिविधयों में भाग ले सकते है। इससे आपको बहुत कुछ नया सीखने को मिलेगा।

पुस्तकालय का समय - दोपहर: 12:00 से सायं 7:00 बजे तक है।

हमारा पता – अजित फाउण्डेशन

आचार्यों की ढाल, सेवगों की गली, बीकानेर। मो. 7014198275 9509867486

अपनी रचनाएं ईमेल पर ही भेजे chahalpahalnew@gmail.com